

दिनकर के कर्ण : संदर्भ रश्मिरथी

सुमित यादव

अतिथि प्रवक्ता — हिन्दी-विभाग

श्यामाप्रसाद कॉलेज - कोलकाता

शोध आलेख सार

रामधारी सिंह 'दिनकर' की प्रसिद्ध काव्यकृति रश्मिरथी महाभारत के उपेक्षित नायक कर्ण के जीवन को केंद्र में रखकर रची गई एक सामाजिक और नैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। इस महाकाव्य में कर्ण को जन्मना जाति-व्यवस्था, सामाजिक अन्याय और नियति के प्रतिकूल परिस्थितियों से निरंतर संघर्ष करते हुए चित्रित किया गया है। दिनकर ने कर्ण को एक ऐसे नायक के रूप में प्रस्तुत किया है जो पराजित होकर भी नैतिक विजय प्राप्त करता है। रश्मिरथी केवल एक वीर-प्रशस्ति नहीं, अपितु दलित-शोषित वर्ग के अधिकारों, आत्मगौरव और आत्मसंघर्ष का प्रतीक ग्रंथ है। इसमें कर्ण की दुर्योधन के प्रति निष्ठा, समाज के अपमानजनक व्यवहार के प्रति विद्रोह, और आत्मसम्मान के लिए उसके त्याग को अत्यंत भावनात्मक एवं प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। दिनकर का यह कथन कि "कर्ण का भाग्य बहुत दिनों बाद जगा है", उस ऐतिहासिक अन्याय की ओर संकेत करता है जिसे रश्मिरथी साहित्यिक न्याय में परिवर्तित करती है। यह रचना आज भी जातीय असमानता, सामाजिक मूल्य-च्युतता और नैतिक संकल्पों की प्रासंगिक बहस को गति देती है। अतः रश्मिरथी एक काव्य नहीं, बल्कि एक चेतना है।

मुख्य शब्द: कर्ण, वीरता, जाति, संघर्ष, संवाद, सामाजिक न्याय, आत्मगौरव।

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म उस युग में हुआ जिस

युग में पूरा विश्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। हिंदी साहित्य में रामधारी सिंह दिनकर किसी परिचय के मोहताज नहीं है। दिनकर स्वतंत्रता पूर्व के विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रकवि के रूप में जाने जाते हैं। दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। बचपन में पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इनका लालन पालन बहुत ही कठिनाइयों और संघर्ष से हुआ था। रामधारी सिंह 'दिनकर' का सार्वजनिक जीवन बहुआयामी रहा। वे एक ओर जहाँ प्रखर राष्ट्रवादी कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए, वहीं दूसरी ओर शासन-प्रशासन और शिक्षा क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया। साहित्य और राजनीति की दो धाराओं में समान रूप से सक्रिय रहते हुए वे वर्ष 1964 तक भारतीय संसद के उच्च सदन राज्यसभा के सदस्य रहे। इसके उपरान्त उन्हें भागलपुर विश्वविद्यालय का उप-कुलपति नियुक्त किया गया, जहाँ उन्होंने शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसकी नीतिगत दिशा तय करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1965 में उन्हें अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया। उनके साहित्यिक योगदानों की देश भर में सराहना हुई। इसी क्रम में उन्हें वर्ष 1959 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' सम्मान प्रदान किया गया। इसके बाद 1960 में उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से भी नवाजा गया, जो उनकी रचना 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए प्रदान किया गया था। वर्ष 1962 में उन्हें पटना विश्वविद्यालय ने डी.लिट् की मानद उपाधि से अलंकृत किया। और अंततः, साहित्य के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें 1972 में भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। जब उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला तब ज्ञानपीठ पुरस्कार के संबंध में हरिवंश राय बच्चन जी लिखते हैं कि - "दिनकर जी ने श्रमसाध्य जीवन जिया। उनकी साहित्य-साधना अपूर्व थी। कुछ समय पहले मुझे एक सज्जन ने कलकत्ता से पत्र लिखा कि दिनकर का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना कितना उपयुक्त है? मैंने उन्हें उत्तर में लिखा था कि यदि चार ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें मिलते, तो उनका उचित सम्मान होता गद्य, पद्य, भाषणों

और हिन्दी-प्रचार के लिए।” 1 (अर्धनारीश्वर पृष्ठ संख्या पुस्तक के फ्लैग से)

इस यशस्वी साहित्यकार का जीवन 24 अप्रैल 1974 को मद्रास (अब चेन्नई) में समाप्त हुआ। उनके निधन से हिन्दी साहित्य ने एक ओजस्वी और राष्ट्रवादी स्वर को सदा के लिए खो दिया, किंतु उनकी रचनाएँ आज भी जनमानस में चेतना और प्रेरणा का संचार करती हैं।

दिनकर के साहित्यिक रचनाओं में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चेतना के दर्शन साफ दिखाई देता है। अज्ञेय ने उनके संदर्भ में लिखा है कि - “उनकी राष्ट्रीय चेतना और व्यापक सांस्कृतिक दृष्टि, उनकी वाणी का ओज और काव्यभाषा के तत्त्वों पर बल, उनका सात्त्विक मूल्यों का आग्रह उन्हें पारम्परिक रीति से जोड़े रखता है।” 2 (अर्धनारीश्वर पृष्ठ संख्या पुस्तक के फ्लैग से)

उनकी प्रसिद्ध रचना रश्मिरथी जिसका अर्थ है- “सूर्य का सारथी” रामधारी सिंह दिनकर की एक महान कृति है, जो महाभारत के सबसे जटिल और सम्मोहक पात्रों में से एक कर्ण के जीवन को दर्शाती है। यह कविता कर्ण की यात्रा का वर्णन करती है - सूर्य देव के पुत्र के रूप में उसके जन्म से लेकर कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में उसके दुःखद अंत तक। दिनकर की कविताओं में भाग्य के विरुद्ध कर्ण के संघर्ष, दुर्योधन के प्रति उसकी निष्ठा और सम्मान के लिए लड़ने के उसके दृढ़ संकल्प को दर्शाया गया है, भले ही भाग्य उसके विरुद्ध हो। दिनकर स्वयं रश्मिरथी की भूमिका में लिखते हैं कि जब वह कर्ण के बारे में लिखना आरंभ करते हैं तो उस समय तक कर्ण पर कोई भी रचना उपलब्ध नहीं थी। लेकिन रश्मिरथी समाप्त होते-होते कर्ण पर बहुत सारी रचना लिखी जा चुकी थी। उन्होंने कहा है कि साहित्य को एक पक्षी नहीं होना चाहिए। यह कल एक पक्षीय कभी नहीं रहा। जिस पात्र को आदिकाल से ही कलंकीत मानव के रूप में दुनिया जानती थी, आज उसके पक्ष में लोग खड़े हुए। उनके पक्ष में कविताएँ लिखना यह दर्शाता है कि आज के लेखक बनी बनाई परंपराओं से बंधे हुए नहीं हैं। वह किसी एक विचारधारा को मनाने के लिए बाध्य नहीं हैं। दिनकर जी ने स्वीकार है कि यह युग दलित और उपेक्षितों के द्वारा का युग है। आज के कवियों का ध्यान ऐसे पत्रों पर जाना स्वाभाविक है। उन्होंने रश्मिरथी की भूमिका में लिखा है - “कर्ण का भाग्य, सचमुच, बहुत दिनों के बाद जगा है। यह उसी का परिणाम है कि उसके पार जाने के लिए आज जलयान पर जलयान तैयार हो रहे हैं।

जहाजों के इस बड़े बेड़े में मेरी ओर से एक छोटी-सी डोंगी ही सही।” 3 (पृष्ठ संख्या 11 रश्मिरथी)

दिनकर को महाभारत के कर्ण में एक नायक का स्वरूप मिल गया। उन्होंने ऐसे नायक की तलाश की जो विजई ना हो करके भी विजई हो। यह कहना उचित न होगा कि दिनकर का मन तेजस्वी कर्ण के व्यक्तित्व से सहज ही अभिभूत हो गया। युयुत्सा और संघर्ष कर्ण को जन्मजात मिली। बचपन से ही कर्ण को महान योद्धा बनने का सपना था और उसका पहला सपना असफल तब हुआ, जब आचार्य द्रोण ने उसे अपना शिष्य मानने से अस्वीकार कर दिया। अंततः उसे अपना शिष्य नहीं बनाएं। परंतु कर्ण इतना आसानी से हार नहीं माना, वह तो मरुस्थल की वनस्पति पर गव साल लेकर जन्म था। इसीलिए तो दिनकर ने उसे अपनी कविता में नायक बनाएं। महान योद्धा कहे जाने वाले अर्जुन को कर्ण रणभूमि में अर्जुन को चुनौती देते हुए कहता है कि अपने आप पर जो इतना अभिमान कर रहे हो वह मैं कुछ क्षण में खत्म कर सकता हूँ। तुम जो यह चमत्कार दिखा रहे हो मैं उससे कई ज्यादा और कई अच्छी चीज है कर सकता हूँ और तुम्हें भी कुछ नया सीख सकता हूँ। -

“अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल ।

तुने जो-जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ,

चाहे तो कुछ नयी कलाएँ भी सिखला सकता हूँ।” 4 (पृष्ठ संख्या 18 रश्मिरथी)

इस प्रकार कारण पूरे सभा को अपने पराक्रम के द्वारा चुप करा कर चला जाता है और पूरे समाज में उसके वीरता की प्रशंसा होने लगती है। तभी कृपाचार्य ने उसे उसकी जाति पूछा। ब्राह्मण क्षत्रिय नहीं होने पर वह कभी भी सर्वश्रेष्ठ योद्धा नहीं हो सकता है यह कर कर उसे अपमानित किया गया। तब कर्ण क्रोध से कहता है -

“जाति जाति रटते, जिनकी पूंजी केवल पाषण्ड,

मैं क्या जानू जाती? जाति हैं ये मेरे भुजदंड।” 5

(पृष्ठ संख्या 19 रश्मिरथी)

कर्ण के माध्यम से दिनकर ने वीरता, त्याग एवं मानवीय मूल्यों को उजागर किया है। कर्ण का त्याग इतना है कि वह जिस कुल और जाति का नहीं है वह उसे होना पड़ा और जिस कुल और जाति का वह है उसमें उसे स्वीकार ही नहीं। जिस समय पूरा समाज उसे सूत पुत्र कह कर पुकार रहा था उस समय दुर्योधन ने उसका साथ दिया और उसे राजा बनाया। लेकिन उसके बाद भी आचार्य गण और मुनियों ने

उसे स्वीकार नहीं किया। और उसके जात को लेकर उसे ताना मारते रहे..। कविता में घटनाक्रम धीरे-धीरे आगे बढ़ता है और महाभारत (युद्ध) का समय आ जाता है। कुंती कर्ण प्रसंग में जब कुंती उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकारना चाहती है तब कर्ण मना कर देता है। वह दुर्योधन को छोड़कर नहीं जाना चाहता है, वह कहता है जब तुमने मुझे जन्म देकर नहीं अपनाया तब दुर्योधन ने मुझे इस जगत में वह सम्मान दिया, जो यह दुनिया में मेरे लिए किसी ने नहीं किया। और वह कुंती को जवाब देता देते हुए कहता है कि आज तुम मुझे भड़काने आई हो ? उसके खिलाफ षडयंत्र करने के लिए कह रही हो, यह मैं मरते दम तक नहीं करूंगा। लेकिन कर्ण आखिरकार कितना देर तक कठोर रह सकता था माता के सामने। उसने वचन दिया कि अर्जुन को छोड़कर शेष पुत्रों को कुछ नहीं होने देगा रण में। वह माता के सामने बहुत विनम्रता से उन्हें समझाता है और कहता है कि मैं दुर्योधन को नहीं छोड़ सकता हूं। मैं जानता हूं उसमें लाख बुराइयां हैं। उसके बावजूद भी मैं उसके कर्ज तले तबाह हूं, और मैं उससे इस वक्त बेमानी नहीं करूंगा जिस वक्त उसे मेरी सबसे ज्यादा जरूरत होगी। वह माता कुंती को बताता है कि जीवन में तो उसने बहुत सारा नाम पाया, सूत पुत्र लोगों ने पुकारे लेकिन इस समय अगर मैं उसका साथ नहीं दूंगा तो गद्दार, छलिया कहलाऊंगा। कृष्ण कर्ण संवाद में जब कृष्ण कर्ण को सब कुछ सच बताने आते हैं और उसे पांडव का साथ देने के लिए कहते हैं। वह कहते हैं वहां तुम्हें उचित सम्मान मिलेगा। सभी पांडवों में तुम बड़े हो, अर्जुन, नकुल, सहदेव, भीम और युधिष्ठिर तुम्हारी सेवा करेंगे। तब भी वह कृष्ण को वही जवाब देता है और कहता है कि मैं दुर्योधन के साथ छल नहीं करूंगा। अंत में कृष्ण उसे भविष्य के बारे में बताते हैं। तब कर्ण कहता है, मुझे पता है कि दुर्योधन के पास प्रलय आने वाला है। लेकिन मैं इस वक्त इस मुश्किल की बेला में दुर्योधन को अकेला नहीं छोड़ सकता हूं। वह बहुत ही विनम्रता से मना कर देता है-

“सच है मेरी है आप उसे,
मुझ पर अटूट विश्वास उसे,
हां, सच है मेरे ही बल पर,
ठाना है उसने महासमर।
पर मैं कैसा पापी हूंगा,
दुर्योधन को धोखा दूंगा ?
रह साथ सदा खेल, खाया,
सौभाग्य सुयश उससे पाया,
अब जब विपत्ति आने को है,

घनघोर प्रलय छाने को है,
तज उसे भाग यदि जाऊंगा,
कायर, कृतघ्न कहलाऊंगा।” 6

(पृष्ठ संख्या 52, 53 रश्मिरथी)

‘सप्तम सर्ग’ में दिनकर जी ने कर्ण की उदारता और नैतिक दृढ़ता का प्रभावशाली चित्रण किया है। जब वह युद्धभूमि में उतरता है, तो अपने कई वचनों का भार अपने साथ लिए होता है। युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव को वह अनेक बार पराजित करता है, परंतु उनका वध नहीं करता। उसके सम्मुख बार-बार अपनी माता कुंती की वह प्रतिज्ञा मूर्तिमान हो उठती है, जिसमें उसने उन्हें वचन दिया था कि पांडवों में पाँच पुत्र जीवित रहेंगे। उस प्रतिज्ञा के अनुसार युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव को वह युद्ध में जीवित छोड़ देता है, और अंतिम निर्णायक संग्राम केवल अर्जुन और उसके मध्य होगा। जो भी विजयी होगा, वही पाँचवाँ पांडव कहलाएगा। इस वचन की मर्यादा निभाते हुए कर्ण ने अनगिनत अवसरों पर चारों पांडवों को पराजित करने के उपरांत भी जीवनदान दिया। इसका बहुत ही सुंदर वर्णन इन पंक्तियों में मिलता है –

“कितना पवित्र यह शील ! कर्ण
जब तक भी रहा खड़ा रण में,
चेतनामयी माँ की प्रतिमा
घूमती रही तब तक मन में।
सहदेव, युधिष्ठिर, नकुल,
भीम को बार-बार बस मैं लाकर,
कर दिया मुक्त हँस कर उसने
भीतर से कुछ इङ्गित पाकर।” 7

(पृष्ठ संख्या - 148 रश्मिरथी)

कर्ण अपनी रक्षा का समस्त साधन, कवच और कुण्डल दान में देकर युद्ध करता है, इसी कारण वह महादानी के रूप में विख्यात होता है। युद्धभूमि में वह अपने शत्रुओं को बार-बार जीवनदान देता है, क्योंकि वह वचनों से बंधा हुआ होता है। उसके जीवन का एकमात्र स्वप्न होता है। अर्जुन के साथ युद्ध करना और श्रेष्ठ धनुर्धर सिद्ध होना। किंतु वह इस युद्ध को निष्पक्ष एवं धर्मसम्मत रूप में देखना चाहता है; उसे किसी प्रकार की छल-प्रपंचयुक्त विजय स्वीकार नहीं होती। परंतु दुर्भाग्यवश, ऐसा नहीं हो पाता। जब युद्ध के दौरान उसका रथ पृथ्वी में धँस जाता है, तब अर्जुन उस पर बाण संधान करता है। उस क्षण कर्ण अर्जुन से आग्रह करता है कि

रुको, जब तक मैं अपने रथ का पहिया बाहर निकाल लूँ। मैं तुमसे अपने प्राणों की याचना नहीं कर रहा, मैं केवल धर्मसम्मत और न्यायपूर्ण युद्ध की अपेक्षा कर रहा हूँ।

*"रुको तब तक, चलाना बाण फिर तुम,
हरण करना, सको तो, प्राण फिर तुम।
नहीं अर्जुन ! शरण मैं माँगता हूँ,
समर्थित धर्म से रण माँगता हूँ।" 8*
(पृष्ठ संख्या - 166 रश्मिरथी)

लेकिन कर्ण की अंतिम इच्छा भी पूरी नहीं होती है और उसका वध धर्म से नहीं बल्कि अधर्म से कर दिया जाता है। रश्मिरथी खंडकाव्य की भाषा ओजपूर्ण, प्रवाह पूर्ण एवं वीरता से भरा हुआ है। इस खंडकाव्य में हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत का भरपूर प्रयोग किया गया है। डॉ० अम्बाप्रसाद 'सुमन' के अनुसार - "दिनकर के सम्पूर्ण काव्य पर दृष्टि डालने के उपरान्त यह स्वीकार करना पड़ता है कि भाषा के विकास के साथ साथ विविध छन्दों की राग माधुरी उनकी कविताओं में पूरी पूरी मिलती है। उनकी व्यंजनामयी सरल वाणी में राष्ट्र का स्वर गूँजता है। उनके भाव, भाषा और छन्दों में स्वदेश की मिट्टी की वह गन्ध फैलती है जो सच्चे प्रगतिवाद को नवचेतना प्रदान करती है।" 9

<https://www.hindifiles.com/2021/02/ramdhari-singh-dinkar-jivan-parichay.html#gsc.tab=0>

निष्कर्ष:

कहां जा सकता है कि दिनकर ने रश्मिरथी के माध्यम से कर्ण जैसे उपेक्षित, जाति से तिरस्कृत और सामाजिक न्याय से वंचित पात्र को एक नायक का स्थान प्रदान किया है। यह कृति केवल महाभारत के एक योद्धा की वीरगाथा नहीं, बल्कि उस युगीन मानसिकता पर तीखा प्रहार है जो जन्म के आधार पर व्यक्ति के अधिकार और प्रतिष्ठा तय करती है। कर्ण का संघर्ष, उसका आत्मगौरव, उसका त्याग और दुर्योधन के प्रति उसकी निष्ठा इस बात को प्रमाणित करती है कि नैतिकता केवल बाह्य आचरण में नहीं, बल्कि आंतरिक संकल्प में निहित होती है। दिनकर ने कर्ण को इतिहास के हाशिए से उठाकर साहित्य के केंद्र में स्थापित किया और यह दिखाया कि नायक वह नहीं जो विजयी हो, बल्कि वह है जो अन्याय के विरुद्ध खड़ा हो। इस प्रकार, रश्मिरथी केवल एक काव्य

नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यबोध का सशक्त स्वर बनकर उभरती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. दिनकर, रामधारी सिंह, अर्धनारीश्वर, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण - 2011, पृष्ठ संख्या- पुस्तक के फ्लैग से।
2. वही, पृष्ठ संख्या- पुस्तक के फ्लैग से।
3. दिनकर, रामधारी सिंह, रश्मिरथी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण - 2010, पृष्ठ संख्या - 11
4. वही, पृष्ठ संख्या - 18
5. वही, पृष्ठ संख्या - 19
6. वही, पृष्ठ संख्या - 52- 53
7. वही, पृष्ठ संख्या - 148
8. वही, पृष्ठ संख्या - 166
9. <https://www.hindifiles.com/2021/02/ramdhari-singh-dinkar-jivan-parichay.html#gsc.tab=0>